वीर सावरकर

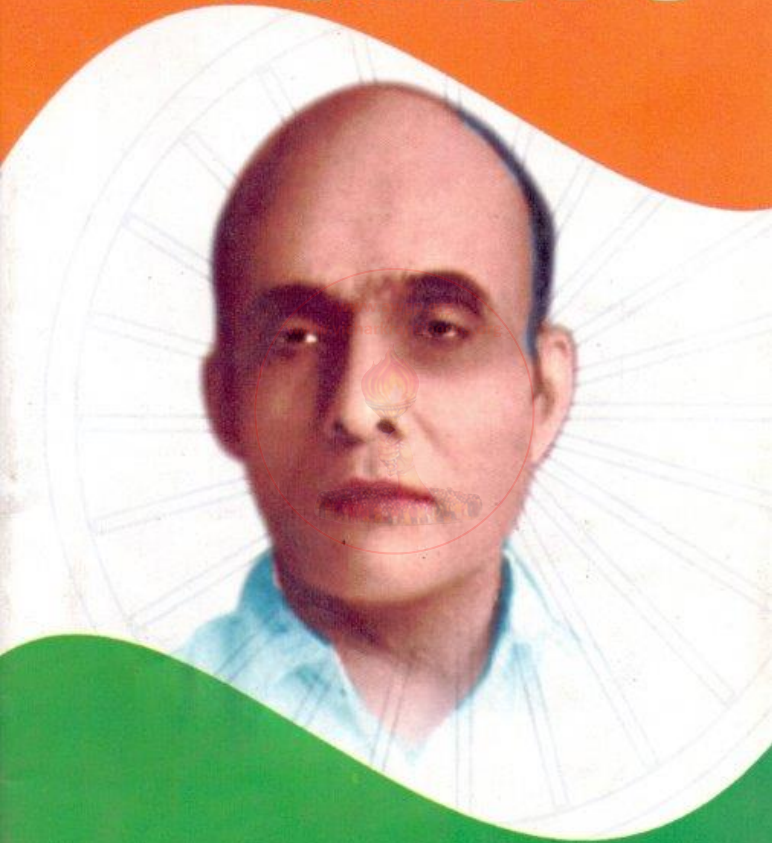

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

स्वातंत्र्य यज्ञ के हुतात्मा—
वीर सावरकर

रत्नगर्भा भारत माता ने समय-समय पर जिन विभूतियों को उत्पन्न किया है, स्वनाम धन्य नर-शार्दूल सावरकर का स्थान उनमें बहुत ऊँचा है। सांसारिक अभ्युदय के लिए जिन साधनों, जिन योग्यताओं और जिन सुविधाओं की आवश्यकताएँ हैं, उन सबके होते हुए भी सावरकर जी ने अपनी जवानी में अपने उज्ज्वल भविष्य, सुख-समृद्धि-संपन्न, सफल पारिवारिक जीवन, इष्ट मित्रों, बंधु-बांधवों की सुनहरी आशाओं पर पानी फेर भारत माता की एक-एक आह पर अपनी अनेक अतृप्त चाहों को बलिदान कर दिया था।

महाराष्ट्र के चिरपावन ब्राह्मणों का वंश भारत में प्रसिद्ध है। विगत दो शताब्दियों से इस वंश में निरंतर ऐसे महापुरुष जन्म लेते रहे हैं, जिन्होंने अपनी प्रिय भारत-भूमि की स्वतंत्रता के लिए विदेशियों से जूझते हुए अपने प्राण तक देना गौरव का चिह्न समझा है। १८५७ के क्रांति-युद्ध के नेता नाना साहब पेशवा, ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह करने वाले वासुदेव बलवंत, फड़के, पूना के अंग्रेज अधिकारियों को मारकर प्राण-दंड पाने वाले चापेकर बंधु और रानाडे तथा लोकमान्य तिलक भी इसी वंश में पैदा हुए थे। इसी वंश में नासिक के समीप भगूर नामक गाँव में श्री दामोदर पंत सावरकर के यहाँ २८ मई सन् १८८३ को हमारे चरित्र-नायक श्री विनायक सावरकर का जन्म हुआ था, जो आगे चलकर क्रांतिकारियों के अग्रणी बने, जिनको विदेशियों ने 'हुतात्मा' कहकर संबोधित किया, जिसे यूरोपीय राजनीतिज्ञों ने मेजिनी, गैरीवाल्डी वुल्फटोन आदि कहकर उसकी प्रशंसा की और जिसे अखिल भारतवर्ष ने 'स्वतंत्र वीर' की उपाधि से विभूषित किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सावरकर-बंधु तीन भाई थे। बड़े श्री गणेश, मझले हमारे चरित्र-नायक श्री विनायक और छोटे श्री नारायण।

शैशव काल—

किशोरावस्था में ही विनायक में ईश्वरप्रदत्त दैवी शक्तियाँ दृष्टिगोचर होने लगी थीं। इनके पिता इनमें ऊँची भावनाएँ भरने के लिए महाभारत और रामायण की कहानियाँ तथा छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि राष्ट्रीय वीर-पुरुषों की गाथाएँ सुनाया करते थे। इनके पिता स्वयं एक अच्छे कवि थे और वे अपने पुत्र में भी काव्य प्रतिभा पैदा करने के उद्देश्य से उन्हें मराठी के प्रख्यात कवि वापन, मोरोपना और संत तुकाराम की कविताएँ सुनाया करते थे। इससे इनमें बचपन में ही ऐसी प्रेरणा हुई कि दस वर्ष की आयु में ही इन्होंने कविता करना आरंभ कर दिया था और मराठी के प्रसिद्ध पत्र उन्हें चाव से छापने लगे थे, यद्यपि वे यह न जानते थे कि इनका रचयिता दस-बारह वर्ष का बालक है।

घर में बहुत से ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाएँ पड़ी रहती थीं। इनमें महाभारत का मराठी अनुवाद 'केसरी' पत्र की प्रतियाँ तथा मराठा वीरों की विजय गाथाओं से भरी पुस्तकें प्रमुख थीं। फुरसत के समय में विनायक इन्हें पढ़ा करते और अपने साथियों में राष्ट्रीयता के भाव भरा करते थे। इसके कारण वे अपने मित्रों में विद्वान्, देशभक्त और ओजस्वी वक्ता के रूप में पूजे जाते थे।

अपने पिता के साथ विनायक प्रतिदिन देव-पूजा किया करते थे। घर में दुर्गा की एक भव्य मूर्ति थी। उन्हें विदित था कि शिवाजी देवी दुर्गा (भवानी) के एकनिष्ठ भक्त थे। इनके लिए श्री दुर्गा प्रेरणा-शक्ति थी। वे कई घंटों तक उसके समीप बैठे रहने और अपने देश को पराधीनता से मुक्त करने हेतु सहायता की याचना किया करते।

सन् १८६७ में महाराष्ट्र में राजनीतिक जागरण का जोर था। राष्ट्रीय महासभा का शानदार सफल अधिवेशन, शिवाजी-जयंती और सार्वजनिक गणेशोत्सव आदि समारोहों ने मराठा युवकों में एक अभूतपूर्व जोश पैदा कर दिया। पूना इस आंदोलन का केंद्र था। इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जोशीले राजनैतिक वातावरण से विनायक बहुत प्रभावित हो रहे थे। उसी समय पूना में भयानक प्लेग की बीमारी फैल गई और प्रतिदिन सैकड़ों व्यक्ति उचित चिकित्सा के अभाव में काल के ग्रास बन रहे थे। तिस पर अंग्रेज अफसरों ने प्लेग के चूहों का निर्मूलन करने के नाम पर घरों में घुसकर संभ्रांत परिवारों की स्त्रियों के साथ में अभद्र व्यवहार करना शुरू कर दिया था। अंग्रेजों के इस अशिष्ट एवं उद्दंड व्यवहार से कुपित होकर एक दिन चापेकर बंधुओं ने एक अंग्रेज अधिकारी मि० रैंड को गोली से उड़ा दिया। यह समाचार बिजली की भाँति सर्वत्र फैल गया। धर-पकड़ आरंभ हुई। नातु-बंधु निर्वासित किए गए। लोकमान्य तिलक गिरफ्तार कर जेल भेज दिए गए। चापेकर बंधुओं को प्राण दंड दिया गया। जिस दिन चापेकर बंधु यरवदा जेल में फाँसी पर लटकाये गये, उसी दिन उन्होंने प्रातः उठकर प्रार्थना की और भगवद् गीता का पाठ करते हुए हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गये। किशोर विनायक सावरकर पर इस घटना का गहरा असर हुआ। वे आप ही आप बोलने लगे—"चापेकर बंधुओं ने मातृभूमि की प्रतिष्ठा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, तो क्या मैं मौज-शौक में ही अपना जीवन बिताते हुए अंग्रेजों के अत्याचारों को केवल दर्शक बनकर देखता रहूँ ! चापेकर का कार्य अधूरा पड़ा है। मैं उसे पूरा करूँगा अन्यथा उसके प्रयत्नों में अपनी प्राणाहुति दे दूँगा।" वे तत्काल घर में प्रतिष्ठित दुर्गा के सम्मुख उपस्थित हुए और थोड़ी देर तक आँखें मूँदकर शांत खड़े रहने के बाद उन्होंने प्रतिज्ञा की कि—"मैं भारत माता की दास्य-शृंखलाएँ तोड़ने के लिए अपना जीवन अर्पण करता हूँ। मैं गुप्त संस्थाएँ खोलूँगा, शस्त्र बनाऊँगा और समय आने पर हाथ में लेकर भारत माता की स्वतंत्रता के लिए लड़ता-लड़ता मरूँगा।"

उस दिन से विनायक ने अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिए नियमित कार्य आरंभ कर दिया। उन्होंने सन् १९०० में नासिक में एक 'मित्र मेला' नाम से एक संस्था बनाई, जो आगे चलकर 'अभिनव भारत' के रूप में परिवर्तित हो गई थी। यह आरंभ से ही एक क्रांतिकारी संस्था थी, जिसका उद्देश्य सशस्त्र क्रांति द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता प्राप्त करना था। यह संस्था अपना कार्य गुप्त और प्रकट—दोनों प्रकार से करती थी और धीरे-धीरे शाखाएँ सारे भारत में फैल गई थीं।

इस संस्था द्वारा महाराष्ट्र के प्रमुख नगरों में शिवाजी जयंती और सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाये जाते थे और इनके द्वारा जनता में राष्ट्रीयता की ज्योति जगाई जाती थी। आम सभाओं में क्रांतिकारी विचारों का प्रचार कर नवयुवकों को 'मित्र मेला' में भरती किया जाता था।

यौवन काल—

राजनैतिक आंदोलनों में प्रमुख रूप से भाग लेते हुए उन्होंने अपने अध्ययन की कभी उपेक्षा नहीं की और न अपने साथियों को ही करने दी। यही कारण है कि विनायक परीक्षा में कभी भी अनुत्तीर्ण नहीं हुए। १६०१ में इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और कॉलेज की शिक्षा के लिए नासिक छोड़कर पूना जाने का निश्चय किया। पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज में प्रविष्ट होते ही उन्होंने निश्चय किया कि, मैं महाराष्ट्र के कोने-कोने से पूना में विद्याध्ययन के लिए आने वाले छात्रों में राष्ट्रीय विचारों का प्रचार कर सारे प्रांत को थोड़े ही समय में हिला दूँगा, ताकि यहाँ से स्नातक बनकर निकले हुए विद्यार्थी अपने-अपने स्थानों में जाकर प्रांत भर में क्रांति की लहर को फैला दें।

कॉलेज के अध्ययन काल में लगातार इस दिशा में प्रयत्नशील रहे। इतिहास में इनकी स्वाभाविक रुचि थी और संसार की समग्र क्रांतियों के इतिहास का उन्होंने गहन अभ्यास किया था। उनकी वक्तृत्व शक्ति अत्यंत प्रभावोत्पादक थी, महाराष्ट्र के प्रसिद्ध नेता लोकमान्य तिलक एवं शिवराम पंत पराँजपे तक उनकी वक्तृता से प्रभावित हो गए थे। उस समय जब कि अनेक भारतीय नेतागण तक 'होमरूल आंदोलन' चलाते हुए भी खुल्लमखुल्ला स्वराज्य की माँग करने में डरा करते थे, विनायक सावरकर खुलेआम स्वतंत्रता और क्रांति के लिए जनता का आह्वान कर रहे थे। जब कॉलेज के आराम तलब और फैशनेबल लड़के सहभोजों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और खेलों में व्यस्त होते थे, उस समय सावरकर की 'मित्र-मेला' के सदस्य रविवार की संध्या को पहाड़ियों की आँचल में छिपे हुए किसी जन-शून्य खंडहर में एकत्रित होने और वहाँ स्वाधीनता के लिए लड़े जाने वाले स्वातंत्र्य-युद्ध की योजनाएँ निर्धारित करते।

सावरकर की इन उग्र प्रवृत्तियों से कॉलेज के अधिकारी सतर्क हो गये। वे इन क्रांतिकारी विचारों को विद्यार्थियों के लिए हानिकारक समझने लगे। कुछ लोगों ने इन्हें नरमदल में लाने का काफी प्रयत्न भी किया, परंतु सभी प्रयत्न पूर्ण रूप से विफल ही सिद्ध हुए। क्योंकि सावरकर के लिए मेजिनी, गैरीवाल्डी, शिवाजी और समर्थ रामदास ही आदर्श थे। सावरकर तथा उनके संगी-साथी सब एक जैसे कपड़े पहनते, निर्धनता का जीवन बिताते, कठोर अध्ययन करते, नियमपूर्वक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करते, शारीरिक व्यायाम करते और साथ-साथ राजनैतिक विषयों पर विचार करते हुए सदा यह सोचा करते थे कि, किस प्रकार अन्य पराधीन राष्ट्रों ने अपनी परतंत्रता की बेड़ियाँ तोड़ी और किस प्रकार भारत भी इन बेड़ियों को काट सकता है ?

कभी-कभी ये अपने दल के साथ पूना के समीपस्थ पहाड़ी दुर्गों में जाया करते, जहाँ उनके पूर्वजों ने अपनी वीरता की छाप अंकित की थी। कभी वे सिंहगढ़ को देखने जाते और उनके विजयी सेनापति ताना जी की वीरता का स्मरण करके ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे कि, वह उनमें भी ऐसा बल दे, ताकि वे अपने राष्ट्र के प्रति स्व-कर्तव्य का यथोचित पालन कर सकें।

१९०५-६ में देश में स्वदेशी आंदोलन का जोर हुआ। सावरकर इसमें उत्साहपूर्वक कूद पड़े। इन्होंने पूना, नासिक तथा महाराष्ट्र के अन्य स्थानों में स्वदेशी-प्रचार पर ओजस्वी भाषण दिए। ग्रीष्मावकाश में वे दिन में तीन-तीन, चार-चार जगह सभाएँ कर भाषण देते। इनके भाषणों का जनता पर इतना हृदयग्राही प्रभाव पड़ता था कि सहस्रों मनुष्य उन्हें मंत्र-मुग्ध हो सुना करते। जनता में विदेशी वस्तुओं के प्रति घृणा उत्पन्न करने के लिए सावरकर-दल ने विदेशी वस्त्रों की एक बड़ी होली जलाने का निश्चय किया। यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार उस जमाने में इतना उग्र था कि स्वयं लोकमान्य तिलक भी ऐसा साहस करने में आगा-पीछा सोच रहे थे, परंतु सावरकर ने इस काम को करने का बीड़ा उठा लिया और अनेक सभाओं में जोशीले भाषण देकर पूना की जनता को इसके लिए तैयार कर लिया। इस विषय में बुलाई गयी अंतिम सभा में सावरकर ने ओजस्वी वाणी से जनता को संबोधित करते हुए कहा—

"विदेशी वस्त्रों को घृणित और अपवित्र समझकर अग्नि की भेंट कर दो और इस पवित्र अग्नि को साक्षी रखकर आज और अभी से स्वदेशी का व्रत धारण करो।" इस आह्वान का जनता ने सहर्ष स्वागत किया और जिसने जो कुछ विदेशी वस्त्र धारण किया था—कुरता, पाजामा, पैंट, कोट, टोपी सब कुछ होली में फेंक दिया। भीड़ में से एक व्यक्ति ने आपत्ति करते हूए कहा—"वस्त्रों को जलाने से क्या फायदा ? यह तो उसका अपव्यय हुआ।" इस पर विनायक ने बड़ी तेजी से उत्तर दिया—"इस विदेशी वस्त्रों की होली द्वारा उत्पन्न स्वदेश की भावना को आने-पाइयों से नहीं गिना जा सकता। विदेशी वस्त्रों की नहीं, विदेशी साम्राज्य की होली का प्रतीक है। पूना शहर के मध्य एक भव्य मैदान में विदेशी वस्त्रों का विशाल ढेर लगाया गया, अग्नि प्रज्वलित हुई और उसकी ऊँची-ऊँची लपटों से चारों ओर खड़ी जनता उत्साहित और प्रकाशित हो उठी। भारत में विदेशी वस्त्रों की यह सर्व प्रथम होली थी, जिसका सारा श्रेय सावरकर को था। इस अवसर पर स्वयं लोकमान्य तिलक उपस्थित रहे और उन्होंने भी अपने जोशीले भाषण से जनता को स्वदेशी-व्रत के लिए प्रोत्साहित किया।

इस होली कांड से समाचार-पत्रों में बड़ी हलचल मंच गई। 'केसरी', अमृत बाजार पत्रिका, बंगवासी आदि पत्रों में यह समाचार प्रमुख रूप से प्रकाशित हुआ और उस पर कई दिनों तक टीका-टिप्पणियाँ होती रहीं। सरकार परस्त एवं अधगोरे पत्रों ने इसकी तीव्र आलोचना की, जिसके कारण कॉलेज के अधिकारी आतंकित हो गये और उन्होंने सरकारी कोप से बचने के लिए आंदोलन के नेता सावरकर को दस रुपये दंड तथा चौबीस घंटे के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भीतर छात्रावास छोड़ने का आदेश दिया। इस पर 'केसरी काल' आदि महाराष्ट्र के अग्रगण्य राष्ट्रीय पत्रों ने कॉलेज अधिकारियों की घोर निंदा की। नासिक की जनता ने इसके उत्तर में सावरकर के समर्थन में वहाँ भी विदेशी वस्त्रों की प्रचंड होली जलाई। अनेक शहरों और कस्बों की सभाओं में सावरकर की प्रशंसा में प्रस्ताव पास किए गये और उनके लिए धनराशि एकत्रित की गई, जिससे सावरकर न केवल कॉलेज की—दंड राशि ही चुका सके, बल्कि उन्होंने शेष धन सार्वजनिक निधि को दान दिया। बाद में बंबई विश्वविद्यालय ने उन्हें बी० ए० की परीक्षा में सम्मिलित होने की आज्ञा दे दी और वे प्रथम श्रेणी में बी० ए० में उत्तीर्ण हुए।

क्रांति का श्रीगणेश—

सन् १९०५ में सावरकर ने स्नातक बनते ही अपना राजनैतिक आंदोलन पुनः तीव्र-गति से जारी करने की ठानी, उन्होंने अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक सभा गुप्त रूप से बुलाई, जिसमें महाराष्ट्र के विविध संस्थाओं के लगभग दो-सौ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सबने खड़े होकर एक स्वर से देश की स्वतंत्रता के लिए प्राणपण से लड़ने की प्रतिज्ञा की। तत्पश्चात् सावरकर ने उसी सभा में 'अभिनव भारत' नाम से एक क्रांतिकारी संस्था का संगठन किया और वे स्वयं इस संस्था की शाखाएँ सर्वत्र स्थापित करने हेतु महाराष्ट्र के विविध नगरों में घूम-घूम कर प्रचार कार्य करने लगे।

यह सब करते हुए सावरकर बंबई में वकालत भी पढ़ रहे थे। ठीक उन्हीं दिनों लंदन में 'होमरूल सोसायटी' के जन्मदाता डॉ० श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भारतीय विद्यार्थियों को विदेश के स्वतंत्र वातावरण में राजनीति का अध्ययन करने के लिए एक छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। सावरकर ने इसे प्राप्त करने के लिए लोकमान्य तिलक के प्रशस्ति-पत्र के साथ एक प्रार्थना-पत्र भेजा, जो स्वीकार हो गया। सावरकर के श्वसुर चिपलूनकर ने उन्हें विलायत यात्रा के लिए आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की। सावरकर इस समय अंग्रेजों की निगाह में खतरनाक सिद्ध हो चुके थे और फलतः इन पर पुलिस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की निगरानी भी आरंभ हो गई थी। नासिक का उनका एक भाषण इतना क्रांतिकारी था कि सरकार उन्हें गिरफ्तार करने की सोच ही रही थी, पर उनकी विदेश यात्रा की खबर पाकर वह चुपचाप बैठ गई। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ शायद यह भी सोचते होंगे कि इंग्लैंड जाकर सावरकर संभवतः ब्रिटिश साम्राज्य की महान् शक्ति को देखकर अपना दृष्टिकोण बदल देंगे अथवा बैरिस्टर होने के बाद आर्थिक प्रलोभनों में पड़कर राजनैतिक आंदोलन से हट जावेंगे, परंतु उनकी यह धारणा बिल्कुल भ्रमपूर्ण थी। क्योंकि भारत से विदा होने के पूर्व पूना की एक गुप्त सभा में अपने साथियों के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने स्पष्ट घोषणा की थी—कि "अब तक मैं केवल महाराष्ट्र भर के युवकों में राष्ट्रीय भावना भरता रहा हूँ, पर अब इंग्लैंड जाकर वहाँ मुझे भारत के विभिन्न प्रांतों के होनहार विद्यार्थियों में प्रचार करने का सुअवसर मिलेगा।" वे सब लोग बाद में बैरिस्टर, डॉक्टर, प्रोफेसर आदि बनकर जब स्वदेश लौटेंगे, तब देश भर में क्रांति मचा देंगे। मुझे यह अच्छा स्वर्ण अवसर मिला है, जिसका मैं समुचित लाभ उठाऊँगा। मैं शत्रु के गढ़ में जाकर उसे भारत की अदम्य शक्ति का परिचय कराऊँगा।

इंग्लैंड के लिए प्रस्थान—

मई १९०६ में बाईस वर्ष की आयु में सावरकर ने लंदन के लिए प्रस्थान किया। जहाज पर यात्रा में सावरकर खाली न बैठे। वे उसी जहाज से विदेश जा रहे थे, अन्य भारतीय विद्यार्थियों से बातचीत करते हुए उनमें राष्ट्रीयता की भावना भरते थे। इंग्लैंड पहुँचने पर श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इनका हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने उस समय इंग्लैंड में भारतीय स्वतंत्रता के लिए 'होमरूल लीग' की स्थापना की थी और उसके अंतर्गत अपना आंदोलन चला रहे थे। पर सावरकर ने लंदन पहुँचने के एक वर्ष के भीतर ही वहाँ 'फ्री इंडिया सोसायटी' नामक दूसरी उग्र संस्था खोली। इसके तत्त्वावधान में वे हर सप्ताह लंदन के विभिन्न क्षेत्रों में सभाएँ करते और उनमें इटली, फ्रांस, अमेरिका आदि देशों की क्रांतियों पर ओजस्वी भाषण देते। इन सभाओं में काफी तादात में भारतीय युवक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मिलित होते थे। इनमें से जो कुछ कर गुरजने की इच्छा प्रकट करते, उन्हें सावरकर अपनी 'फ्री इंडिया सोसायटी' का सदस्य बना लेते थे।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा भी सावरकर की प्रतिभा एवं प्रवृत्तियों से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी 'होमरूल लीग' बंद कर सावरकर की सोसायटी में सम्मिलित हो गये और अपना 'इंडिया हाउस' नामक भवन सावरकर को सौंपकर स्वयं पेरिस चले गये। इसी समय लाला हरदयाल जी भी, जो आई० सी० एस० की परीक्षा पास करने लंदन गये थे, सावरकर के संपर्क में आये और उन्होंने भी भारतीय स्वतंत्रता के लिए जीवन अर्पण करने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने सरकारी एवं विश्वविद्यालय से प्राप्त होने वाली छात्रवृत्ति त्याग दी और क्रांतिकारी विचारों के कारण आजीवन भारत से निर्वासित रहे। इनके अतिरिक्त स्व० सरोजनी नायडू के भाई हरिंद्र चट्टोपाध्याय, प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानंद, श्री ज्ञानचंद वर्मा, सेनापति जापट, पारसी समाज की प्रथम क्रांतिकारी महिला मिकाजी कामा आदि लोग सावरकर के तेजस्वी व्यक्तित्व एवं प्रखर देश प्रेम से प्रभावित होकर उनके सहयोगी बन गये।

इसी समय भारत में 'बंगभंग आंदोलन' ने उग्र रूप धारण कर लिया और देश में खासकर बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र में हिंसात्मक कार्रवाई आरंभ हो गई। पंजाब के लाला लाजपतराय और अजितसिंह निर्वासित किये गये। इस समस्या से इंग्लैंड के भारतीयों पर मानों बिजली कौंध गई। तत्काल भारत-सरकार की इस कुटिल कार्रवाई की निंदा करने हेतु लंदन में एक आम सभा की, जिसमें सावरकर ने ब्रिटिश सरकार की कटु आलोचना करते हुए भारतीय युवकों से अपील की कि, वह इसका बदला चुकाने के लिए अपने सर्वस्व की बाजी लगा दें। सावरकर ने लंदन में एक निर्वासित रूसी क्रांतिकारी से बम बनाने की विधि सीख ली और उसे भारत में भी गुप्त रीति से भेजकर प्रचारित किया। सावरकर स्वयं भी बम बनाकर अपने साथियों को इसकी क्रियात्मक शिक्षा देते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस समय लंदन का 'इंडिया हाउस' सावरकर की विविध प्रवृत्तियों का केंद्र बन गया था। वहाँ से प्रतिदिन हजारों पोस्टर और पैंपलेट छापे जाते और उन्हें गुप्त रूप से भारत के विविध नगरों में प्रचारार्थ भेजा जाता था। साथ ही यहीं गुप्त सभाएँ भी हुआ करती थीं। इसी बीच सावकर ने इटली के क्रांतिकारी नेता जोजेफ मैंजिनी की आत्म-कथा का मराठी अनुवाद प्रकाशनार्थ भारत भेज दिया, जो नासिक में प्रकाशित हुआ। जनता में इस पुस्तक की आशातीत बिक्री हुई। अनेक समाचार पत्रों ने इस पुस्तक पर संपादकीय लेख लिखकर उसकी प्रशंसा की। सरकार को यह असह्य हुआ और उसने उक्त पुस्तक को जप्त कर लिया। सावरकर जी का दूसरा ग्रंथ '१८५७ का स्वातंत्र्य-संग्राम' था। मैजिनी के चरित्र द्वारा सावरकर भारतीयों को पश्चिमी ढंग की क्रांति का पाठ पढ़ाना चाहते थे और '१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम' द्वारा विषम परिस्थिति में भी क्रांति के लिए प्रेरित करना चाहते थे। सरकार ने इसे भी शीघ्र ही जप्त कर लिया।

सावरकर द्वारा संस्थापित 'अभिनव भारत' संस्था की बढ़ती हुई ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने इस संस्था को कुचलने का निश्चय किया। तदनुसार लंदन का गुप्तचर विभाग भारतीय विद्यार्थियों की सभी गतिविधियों पर सतर्कता के साथ कड़ी नजर रखने लगा। इतना सब होते हुए भी 'अभिनव भारत' द्वारा मैडम कामा के संपादकत्व में लंदन में 'वंदेमातरम्' नामक पत्र प्रकाशित होता रहा और इसकी जोशीले लेखों से भरी हुई प्रतियाँ ब्रिटिश सरकार की आँखों में धूल झोंककर भारत के अनेक नगरों में पहुँच जाती थीं।

लंदन में सावरकर के 'इंडिया हाउस' पर खुफिया पुलिस का सख्त पहरा था। जिस पर भी सावरकर-दल अपना कार्य सुचारु रूप से चलाता रहा। कुछ भारतीय युवक तो खुफिया विभाग में भी भर्ती हो गये थे और अपनी वेतन 'अभिनव भारत संस्था' को दे दिया करते थे। कुछ ही दिनों बाद इसका रहस्य खुल गया और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सावरकर की गिरफ्तारी के लिए वारंट जारी किया गया, परंतु ज्यों ही उन्हें पता लगा, वे लंदन छोड़कर अचानक वेल्स चले गये।

वेल्स में भी राजनीतिक कार्यों में अत्यधिक लगन एवं चिंताओं से सावरकर का स्वास्थ्य निरंतर गिरता गया, पर इनके मित्रों ने माता से भी बढ़कर इनकी परिचर्या की। रोग शय्या पर पड़े हुए भी ये क्रांतिकारी पत्रों में लेख लिखते रहे। उन दिनों 'तलवार' नामक पत्र में इन्होंने जो लेख लिखा था, वह क्रांतिकारियों की आंतरिक भावनाओं का परिचायक है। लेख में क्रांतिकारी आंदोलन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा गया था—

"हमें गुप्त संस्थाओं और गुप्त तरीकों से लड़ने में कोई विशेष आनंद नहीं आता। परंतु जहाँ सच्चाई की बात दमन से दबा दी जाती हो, वहाँ गुप्त संस्थाओं का अस्तित्व अनिवार्य हो जाता है। जहाँ किसी राष्ट्र के राजनीतिक विकास एवं विचार को आतक से कुचल दिया जाता हो, वहाँ सत्य को पुनः उसके उच्चासन पर प्रतिष्ठित करने के लिए विद्रोह ही एकमात्र प्रभावशाली साधन शेष रह जाता है। जिन देशों के लोग वैधानिक मार्ग से राज्य में अपना बहुमत स्थापित कर सकती हैं, जैसे—इंगलैंड, फ्रांस, अमेरिका आदि हैं, वहाँ गुप्त संस्थाओं द्वारा षड्यंत्रकारी आंदोलन चलाना अनवरत निंदनीय हो सकता है। हमारे देश में भी जिस दिन वैध उपायों द्वारा अपने उद्देश्य को प्राप्त करना संभव प्रतीत होगा, उस दिन हम भी गुप्त एवं आतंकवादी मार्ग से मुँह मोड़ लेंगे। भारत को हमें हर हालत में स्वतंत्र करना है। हम हृदय से चाहते हैं कि हमारा यह उद्देश्य शांतिपूर्ण और केवल शांतिपूर्ण मार्ग से ही प्राप्त हो, परंतु ब्रिटिश शासन के अमानुषिक अत्याचारों ने हमें मजबूर हो इस आतंकवादी मार्ग को अपनाने के लिए बाध्य किया है। आज भारत में केवल बंदूकों के बल पर शासन चल रहा है। ऐसी दशा में जब कि देश में कोई प्रजातांत्रिक विधान ही नहीं है, वैधानिक आंदोलन की बात करना मूर्खता है। हाँ, जहाँ वैधानिक मार्ग खुले हों, वहाँ हिंसक क्रांति की बात सोचना मूर्खता ही नहीं, भयंकर अपराध भी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चूँकि आप बंदूक रखने नहीं देते, इसलिए हम पिस्तौल उठाते हैं। चूँकि आप प्रकाश में इकट्ठा होने से रोकते हैं, इसलिए हम भारत माता की दास्य-शृंखला से मुक्त करने के उपायों पर विचार करने के लिए अँधेरे में इकट्ठे होते हैं।" ये विचार उस परिस्थिति पर स्पष्ट प्रकाश डाल रहे हैं, जिनके कारण सावरकर को क्रांतिकारी-षड्यंत्रकारी—मार्ग का अवलंब करना पड़ा था।

सावरकर को वेल्स गये अभी पंद्रह दिन भी नहीं बीते थे कि एक दिन इन्होंने अखबार में आश्चर्यचकित हो यह समाचार पढ़ा कि, अनंत कान्हेरे नामक एक ब्राह्मण युवक ने सावरकर के बड़े भाई गणेश सावरकर को दिये गये आजन्म कारावास का बदला लेने के लिए नासिक के कलेक्टर जैक्शन को गोली से उड़ा दिया है। दूसरे दिन यह खबर मिली कि उनके छोटे भाई नारायण तथा अन्य अनेक मित्र हत्या, षड्यंत्र और राजद्रोह के अपराध में पकड़े गये हैं।

अंग्रेजी पत्र खुल्लमखुल्ला भारत में जारी हिंसक उपद्रवों एवं जैक्सन की हत्या का सारा दोष सावरकर पर मढ़ने लगे और इन्हें गिरफ्तार करने पर जोर देने लगे। अंग्रेजों की यह मनोदशा देखकर इनके मित्रों ने इन्हें इंगलैंड छोड़ फ्रांस जाने की सलाह दी। परंतु सावरकर ने अंगीकृत कार्य को अधूरा छोड़कर फ्रांस जाना अनुचित समझा। इस पर 'अभिनव भारत' की कार्यकारिणी ने सावरकर से अनुरोध किया कि हमारे उचित मार्ग-दर्शन एवं आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से आपका जेल से बाहर रहना अत्यंत आवश्यक है, अतः आप फौरन इंगलैंड से फ्रांस चले जाएँ। पेरिस से इसी आशय के कई पत्र आये। श्यामजी कृष्ण वर्मा का भी पेरिस आने के लिए अत्यंत आग्रहपूर्ण आमंत्रण मिला। अतः बड़े दुःख भरे एवं भारी हृदय से वे लंदन के अपने मित्रों से विदाई लेकर पेरिस के लिए रवाना हुए।

पेरिस पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत हुआ। वे वहाँ पारसी क्रांतिकारी महिला मैडम कामा के यहाँ ठहरे। कामा ने माता के समान सावरकर की सब प्रकार से सेवा की, जिससे उन्हें शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ हो गया। श्रीमती कामा पेरिस से 'वंदेमातरम्' नामक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक पत्र प्रकाशित करती थीं, जिसमें वे इंगलैंड, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों में अंग्रेजों द्वारा भारत के बारे में फैलाई जाने वाली झूँठी खबरों का निराकरण किया करती थीं। श्रीमती कामा ने भारतीय कांग्रेस के जनक दादाभाई नौरोजी को ब्रिटिश पार्लियामेंट का सदस्य निर्वाचित कराने में अथक प्रयत्न किया था। बाद में वे 'होमरूल आंदोलन' में सम्मिलित हुईं और कुछ दिन पश्चात् वे सावरकर की क्रांतिकारी संस्था 'अभिनव भारत' की सक्रिय सदस्या बन गईं। एक बार वे बर्लिन में आयोजित अखिल जर्मन समाजवादी सम्मेलन में सम्मिलित हुईं। साथ में वे सावरकर द्वारा स्वीकृत भारतीय तिरंगे, राष्ट्रध्वज को भी ले गई थीं। जब वे सम्मेलन में भाषण देने खड़ी हुईं, तब अपनी जेब से उस ध्वज को निकालकर फहराते हुए बोलीं—

"यह है भारत का स्वतंत्र राष्ट्रीय ध्वज, जो आपके सामने फहरा रहा है। भारतीय देशभक्तों के रक्त से वह पवित्र हो चुका है। अतः मैं उपस्थित सज्जनों से नम्र अनुरोध करती हूँ कि आप सब लोग खड़े होकर भारत की इस स्वतंत्र पताका का सम्मानपूर्वक अभिवादन करें।" श्रीमती कामा के शब्दों का सदस्यों पर जादू-सा असर हुआ और तत्काल सभी लोगों ने खड़े होकर भारतीय ध्वजा की टोप उतारकर वंदना की। इतिहास में यह प्रथम अवसर था, जबकि किसी भारतीय ने विदेश में अपने राष्ट्र की स्वतंत्रपताका फहराने का साहस किया था।

जेक्शन हत्याकांड की अदालती कार्रवाई के समाचार पेरिस पहुँचने लगे। अभियुक्तों ने न्यायालय में पुलिस द्वारा किये गये अमानुषिक अत्याचारों की रोमांचकारी कहानियाँ विस्तार से वर्णन की थीं। अपने मित्रों एवं सहयोगियों पर होने वाले इन अत्याचारों को सुनकर सावरकर सोचने लगे—"क्या यह मनुष्यता है कि मैं अपने साथियों को, जो मेरी ही प्रेरणा से इस षड्यंत्रकारी मार्ग को अपना रहे थे, आग में ढकेलकर स्वयं फ्रांस की इस सुंदर राजधानी में आराम से बैठा तमाशा देखता रहूँ ? जब मैं स्वयं ही प्रत्यक्ष आंदोलन से अलिप्त हूँ, तो अपने साथियों को मैदान में शत्रु से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मोर्चा लेने का आदेश देने का मुझे क्या नैतिक अधिकार है ? मेरे मित्र श्यामजी वर्मा मुझसे कहते हैं कि तुम सेनापति हो, इसलिए तुम्हें सेना के साथ न चलकर पीछे रहना चाहिए, परंतु सेनापति भी सेना की अगली टुकड़ी में लड़कर वीरता दिखाने के बाद ही बनता है, अतएव मैं सेनापति कैसा ? यदि संकटों से घबराने वाला ही सेनापति बनने लगा, तो प्रत्येक सिपाही अपने को सेनापति समझ कर घर बैठना पसंद करेगा। तब मैदान में लड़ने कौन जाएगा ? फिर कायरों और वीरों में अंतर ही क्या रहा ? तब तो कायरों की अपनी कायरता छिपाने का अच्छा साधन मिल जाएगा।"

इस प्रकार सोचते हुए सावरकर वायु सेवन को निकल पड़े। घूमते-घूमते इन्होंने जेब से ताजा अखबार निकाला। उसमें जैक्सन को गोली से उड़ा देने वाले कान्हेरे को प्राण-दंड का समाचार था, जिसे पढ़कर वे उत्तेजित हो आप ही कहने लगे—"एक वह कान्हेरे हैं, जो मेरे उपदेश से प्रेरित होकर फाँसी पर झूलने जा रहा है और एक मैं हूँ, जो यहाँ नदी के किनारे पक्षियों और फूलों की सुंदरता में विहार कर रहा हूँ। एक वे हैं, जो मेरे द्वारा कराई प्रतिज्ञाओं के कारण बेड़ियाँ और हथकड़ियाँ पहने भूखे और प्यासे कारावास की अंधेरी कोठरियों में पड़े सड़ रहे हैं और एक मैं हूँ, जो यहाँ नदी तट पर आनंद से घूम रहा हूँ। नहीं, मुझे अब कुछ कर गुजरना ही होगा। यदि मुझे भारत नहीं जाने दिया गया, तो मैं पुनः इंगलैंड जाऊँगा। मुझे वे सब कष्ट चाहिए, जो मेरे साथी सह रहे हैं। मुझे संसार को बताना होगा कि मैं केवल दूसरों को प्रेरणा ही नहीं देता, स्वयं ही विपत्तियों का वरण कर सकता हूँ। यदि वहाँ मैं पकड़ा गया तो और भी अच्छा होगा और यदि प्राणदंड मिला तो और प्रसन्नता होगी। मातृ-भूमि की सेवा में प्राणार्पण करने की मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायेगी। मैं अवश्य इंगलैंड जाऊँगा और अपने को जानबूझ कर संकट में डालूँगा। कठिन से कठिन विपत्तियों को सहकर ही मैं दूसरों को कष्ट-सहन की प्रेरणा देने का अधिकारी हो सकूँगा।"

इन विचारों में डूबे हुए सावरकर जैसे-तैसे घर लौटे और अपने साथियों को लंदन लौट जाने के अपने निश्चय से अवगत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कराया। दूसरे दिन वे लंदन के लिए जहाज से रवाना हो गए। पेरिस के सभी भारतीय इन्हें बिदाई देने बंदरगाह पर पहुँचे। जहाज पर चढ़कर सबसे अंतिम बिदाई लेते हुए सावरकर बोले—"अब तक मैंने केवल बातूनी कार्य किया है, पर प्रत्यक्ष कार्य द्वारा विपत्तियों का सामना करने जा रहा हूँ। केवल भाषणों और लेखों से देश का उद्धार नहीं हो सकता।"

लंदन में गिरफ्तारी—

जहाज फ्रांस से इंगलैंड पहुँचा। बंदरगाह से सावरकर लंदन जाने वाली रेल पर सवार हुए। यद्यपि वे गिरफ्तारी की आशंका अवश्य कर रहे थे, पर उन्हें यह कल्पना नहीं थी कि वे रेल से उतरते ही गिरफ्तार कर लिए जायेंगे। शुरू से ही उनके डिब्बे पर सशस्त्र पुलिस का पहरा था और ज्यों ही वे लंदन स्टेशन पर डिब्बे से प्लेटफार्म पर उतरे, उन्हें वारंट दिखाकर तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। यह घटना १३ मार्च १९१० की है। दूसरे ही दिन संसार के प्रायः सभी समाचार-पत्रों में इनकी गिरफ्तारी का समाचार प्रकाशित हुआ। बाद में उन्हें अदालत में पेश किया गया। ज्यों ही सावरकर ने न्यायालय में प्रवेश किया, सैकड़ों दर्शकों ने इनका करतल-ध्वनि से स्वागत किया। अदालत द्वारा इन पर राजद्रोह एवं हत्या के लिए प्रोत्साहन का अभियोग लगाकर इन्हें जेल में रखा गया और बाकायदा अदालती कार्रवाई भारत में चलाने का निश्चय किया गया। लंदन के जेल से छुड़ाने के लिए इनके मित्रों ने कई षड्यंत्र रचे पर वे उनमें असफल रहे।

यद्यपि सावरकर को भारत ले जाने की आज्ञा हो चुकी थी। उन दिनों भारत आने के लिए जहाज से इंगलिश खाड़ी को पार कर फ्रांस के किनारे उतरना पड़ता था और वहाँ से रेल द्वारा इटली होकर फिर जहाज द्वारा भारत जाना पड़ता था। ब्रिटिश सरकार सावरकर को फ्रांस होकर भारत नहीं लाना चाहती थी, क्योंकि उसे भय था कि फ्रांसीसी सरकार सावरकर को फ्रांस की भूमि पर छुड़ा लेगी और उल्टे ब्रिटिश सरकार पर सावकर को बलपूर्वक कैद करने का दावा चलायेगी। इसलिए उन्हें इस मार्ग को छोड़ बिस्के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की खाड़ी द्वारा ले जाने का निश्चय किया गया। इस प्रकार सावरकर २६ वर्ष की आयु में बैरिस्टर के स्थान पर कैदी के रूप में मातृ-भूमि के दर्शनों को चल पड़े। जहाज पर इनकी देख-रेख के लिए भारत से विशेष रूप से बुलाये गये हिंदुस्तानी सिपाही तथा लंदन के खुफिया विभाग के अधिकारी रखे गये थे। अंग्रेज सिपाही इस खुशी में फूले न समाते थे कि इस भयंकर क्रांतिकारी को हमने किस चतुराई से बंदी बनाया है ? उधर सावरकर मन ही मन सोच रहे थे कि किस प्रकार जहाज से भाग निकलकर इन अंग्रेजों का घमंड चूर-चूर कर दिया जाय।

सावरकर उचित अवसर की ताक में थे। सौभाग्य से उन्हें ऐसा अवसर मिल गया। जहाज को किसी कारणवश फ्रांस के मार्सेलस बंदरगाह पर लंगर डाला। वीर सावरकर ने दूर तक नजर डाली, पर कोई सहायक उन्हें नजर नहीं आया, जो उन्हें छुड़ाने या भाग निकलने में सहायता करता। अतः अब वे अपने ही बलबूते पर भाग निकलने की युक्ति सोचने लगे। पुलिस सिपाहियों की उन पर कड़ी नजर थी। वे उन्हें अकेला छोड़कर एक मिनट के लिए भी इधर-उधर नहीं जाते थे। स्नान, शौचादि के समय भी सिपाही दरवाजे से अड़कर खड़े रहते और सामने लगे हुए शीशे में उनका प्रतिविंब देखकर प्रत्येक हलचल पर कड़ी निगाह रखते थे। सुबह जहाज चलने का समय हुआ। सावरकर अपने तंग कोठरी में बैठकर सोच रहे थे कि कुछ भी हो आज किसी प्रकार जहाज से निकलना है। पास में दो अंग्रेजी अधिकारी सोये हुए थे और एक सिपाही खड़ा पहरा दे रहा था। उन्होंने पहले वाले गोरे सिपाही से कहा—मुझे शौच के लिए जाना है, ले चलिए।

सिपाही ने अफसर को जगाया और अफसर तथा सिपाही दोनों उन्हें पकड़कर शौचालय में ले गये। सावरकर ने देखा कि शौचालय की कोठरी के ऊपर एक छोटा-सा छेद (पोर्टहोल) है, जहाँ से समुद्र में कूदकर भागा जा सकता है। उन्हें एक तरकीब सूझी। पहने हुए गाऊन को उन्होंने कोठरी के दरवाजे पर डाल दिया, ताकि अंदर का दृश्य बाहर दिखाई न दे सके और फौरन उचक कर खिड़की के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रास्ते समुद्र में कूद पड़े। ज्यों ही पुलिस अधिकारियों को इस अकल्पित घटना का भान हुआ, वे घबरा गये। एक भारतीय कैदी के इस प्रकार के अदम्य साहस एवं अनुपम बहादुरी को देखकर गोरों ने आश्चर्य से दाँतों तले अंगुली दबा ली। सावरकर तैरते हुए डुबकी लगाते हुए फ्रांस के किनारे की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे थे और इधर गोरे सिपाही पीछे से सावरकर पर गोलियों की बौछार कर रहे थे, किंतु सावरकर एक विजयी सिंह की भाँति मीलों तैरने के बाद आखिर फ्रांस के किनारे पर आ पहुँचे। सागर तट फ्रांस की सीमा में था। अतः उन्होंने तट पर खड़े होकर फ्रांसीसी सिपाही से खुद को गिरफ्तार कर लेने को कहा, पर सिपाही उनकी भाषा न समझ सका और उसने सावरकर का पीछा करने वाले अंग्रेज सिपाहियों को चुपचाप सौंप दिया। फलतः सावरकर पुनः बेड़ियों से जकड़ कर जहाज की उसी तंग कोठरी में बंद कर दिये गये।

भारत की ओर प्रस्थान—

सावरकर को लेकर जहाज पुनः भारत की ओर चला। अब उन पर पहरा इतना कड़ा रहने लगा कि कोठरी के बाहर की खुली वायु भी उनके लिए दुश्वार हो गई। दोनों अफसर भी उनकी कोठरी में ही रात-दिन रहने लगे। सावरकर मन ही मन सोचने लगे—"अब क्या किया जाए ? मेरे इतने भयंकर साहस का भी कोई नतीजा नहीं निकला। स्वतंत्र तो हो ही न पाया, उल्टे पाँव की बेड़ियाँ और ज्यादा मजबूत हो गईं। खैर, मैंने अपनी शक्ति भर यत्न किया है। सफलता-असफलता तो ईश्वराधीन है। कर्तव्य करना ही मनुष्य के स्वाधीन है, फल की प्राप्ति नहीं।"

२२ जुलाई को जहाज बंबई बंदरगाह पर पहुँचा और नंगी संगीनों के पहरे में सावरकर ने अपनी मातृ-भूमि पर पैर रखते हुए लौह-जंजीरों से जकड़े हुए हाथों से इस पुण्य भूमि को भक्ति भावना से नतमस्तक हो नमस्कार किया। बंदरगाह से वे बंद मोटर में बिठाकर नासिक पहुँचाये गये और वहाँ उन्हें कड़े पहरे में नजरबंद रखा गया। नासिक जेल में रहते हुए एक दिन एक अंग्रेजी पत्र में सावरकर ने पढ़ा कि फ्रांसीसी सरकार इन्हें ब्रिटिश सरकार से वापस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माँग रही है, क्योंकि इन्हें फ्रांसीसी भूमि पर गिरफ्तार किया गया था, जो कि अंतर्राष्ट्रीय कानून के खिलाफ है। इन्हें संतोष हुआ कि आखिर उनका प्रयत्न विफल न गया। अंग्रेज अफसर चकित थे कि मार्सेलस की घटना पत्रों में कैसे छप गई ? यह समाचार पहले पहल पेरिस से साम्यवाद के जनक कार्लमार्क्स के पौत्र के संपादकत्व में प्रकाशित होने वाले पत्र "ह्यूमैनिटी" में छपा था। उसे सावरकर से बहुत सहानुभूति थी। बाद में फ्रांस के दूसरे पत्रों ने भी इसके लिए तीव्र आंदोलन किया, पर ब्रिटिश सरकार ने सावरकर की फ्रांस लौटाने से साफ इनकार कर दिया और विवाद को शांत करने के लिए यह मामला हेग के अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय को सौंपा गया।

सावरकर ने नासिक जेल में रहते हुए फ्रांस की प्रतिष्ठा पर एक बड़ा ही हृदय स्पर्शी लेख लिखा, जो गुप्त रूप से पेरिस के भारतीय क्रांतिकारियों के पास पहुँचा। उन्होंने उसे छापकर योरोप के अनेक प्रगतिशील देशों में वितरित किया। उधर योरोप में इस प्रकार ब्रिटिश विरोधी आंदोलन चल रहा था और इधर ब्रिटिश सरकार सावरकर को कठोर से कठोर दंड देने के हेतु हेग के न्यायालय के लिये मामला तैयार कर रही थी। दूसरी ओर भारत में भी क्रांतिकारियों को दंड देने के लिए 'स्पेशल ट्रिब्यूनल एक्ट' बनाकर विशेष ट्रिब्यूनल नियुक्त किए जा रहे थे। इन पंच-फैसलों की अपील न हो सकती थी। हेग के अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में अंत में फ्रांस ने अंग्रेजों से दबकर सावरकर को मुक्त कर देने की माँग वापस ले ली।

अब उनका मामला बंबई के स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश हुआ। सशस्त्र सिपाहियों से लैस बंद मोटर में सावरकर को जेल से हाईकोर्ट पहुँचाया गया। न्यायालय में प्रवेश करते ही तालियों की गड़गड़ाहट ने सावरकर का स्वागत किया। चकित होकर जब उन्होंने दर्शकों की गैलरी की ओर देखा, तो वहाँ एक भी दर्शक न था। तब उन्होंने नीचे नजर दौड़ाई, जहाँ ३०-४० अन्य अभियुक्त दिखाई दिये; इन्हीं युवकों ने जंजीरों से जकड़े हुए हाथों से सावरकर का स्वागत किया था। ऐसा स्वागत शायद ही संसार के किसी नेता का आज तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ हो। इन अभियुक्तों में से बहुतों का अपराध केवल सावरकर से संपर्क रखना ही था। इनका छोटा भाई नारायण भी इन्हीं अभियुक्तों में था। तीन मास तक मुकदमा चलने के बाद २३ दिसंबर १६१० को ट्रिब्यूनल ने उन्हें आजन्म काले पानी की सजा सुना दी। सावरकर सजा सुनते ही 'वंदे मातरम्' का नारा लगाकर पीछे हट गए। इसके बाद अन्य अभियुक्तों को भी चौदह से लेकर तीस वर्ष तक के लिए कठोर कारावास का दंड दिया गया।

सावरकर पर सरकार ने दो गंभीर अभियोग लगाये थे। पहला नासिक षड्यंत्र में सहायता देने का और दूसरा जैक्सन की हत्या के लिए प्रोत्साहन देने का। दोनों अभियोगों में उन्हें आजन्म कारावास का अर्थात् ५०-५० वर्ष की काले पानी की सजा सुनाई गई थी, पर दोनों सजाएँ एक साथ चलने वाली थीं। सजाएँ सुनकर सावरकर जरा भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने बड़ी गंभीर और निर्भीक वाणी में न्यायाधीश को संबोधित करते हुए कहा—

"आपने कानून के अनुसार अधिक से अधिक कड़ी सजा मुझे बहाल की है, उसे मैं सहने के लिये सहर्ष तैयार हूँ। क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कष्ट-सहन और स्वार्थ त्याग के द्वारा ही हम अपनी प्रिय मातृ-भूमि का उद्धार कर सकेंगे। हमारी भारत माता अवश्य स्वतंत्र होगी। कब होगी ? यह यद्यपि आज नहीं बताया जा सकता, पर वह स्वतंत्र होगी, यह निश्चित है।"

सावरकर को काले पानी की सजा सुनाने के बाद उन्हें कुछ दिन बंबई के समीप डोंगरी नामक काराग्रह में रखा गया। बाद में वहाँ से उन्हें अंदमान भेजा जाना था। उस समय जिन्हें आजन्म कारावास की सजा होती थी, उन्हें भारत से ६०० मील दूर बंगाल के उपसागर में स्थिति अंदमान नामक द्वीप में रखा जाता था, जहाँ साल में करीब नौ महीने तक लगातार वर्षा हुआ करती है। चारों ओर घना जंगल, सर्द हवा और मच्छरों की भरमार, ऐसे नरक तुल्य स्थान पर कठोर यम-यातनाओं से भरे कारागार में सावरकर को भेजा जा रहा था। अंदमान रवाना होने से पूर्व उन्हें एक बार अपनी पत्नी से भेंट करने की अनुमति मिली थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी पत्नी सजल नेत्रों से जब उनसे मिलने गईं, तब कैदियों के कपड़े पहने ये लौह-सिंकचों से बंद खिड़की के पास खड़े हुए उन्हें दिखाई दिये। बैरिस्टरी की शानदार वेष में देखने की अभिलाषा से प्रेरित उनकी पत्नी ने जब उन्हें इस प्रकार जाँघिया और बनियान पहने कैदी के भेष में देखा तो वे भावावेश में एक बारगी रो पड़ी। धीरोद्दात वीर सावरकर अपनी पत्नी की तीव्र मनोव्यथा का अनुभव कर रहे थे, पर वे स्थितप्रज्ञ हो गंभीर वाणी से पत्नी को सांत्वना देने लगे। उन्होंने कहा—

"धीरज रखो ! केवल संतान पैदा करना और खाना-पीना, मौज करना यही मात्र मानव जीवन का उद्देश्य नहीं है। ऐसा जीवन तो पशु-पक्षी भी बिता रहे हैं। हमें तो समाज और देश की दुर्दशा को मिटाने और भारत माता की गुलामी की बेड़ियाँ चूर-चूर करना है। इसी उद्देश्य से हमने अपने व्यक्तिगत सुखोपभोगों का त्यागकर यह कंटकाकीर्ण मार्ग स्वेच्छा से अपनाया है। हमने स्वयं अपने हाथों अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को तिलांजलि दी है, ताकि भारत के करोड़ों लोगों के कष्ट दूर हों। इसलिए चिंता न करो और धैर्य के साथ आने वाली आपदाओं को सहर्ष सहन करो, यही सच्ची मानवता है। इसी में सच्चा पुरुषार्थ है।"

अंदमान की काल-कोठरी में—

मद्रास से 'महाराजा' जलयान द्वारा वीर सावरकर को अंदमान द्वीप में लाया गया। सागर-तट से रवाना होते ही सावरकर के मन में एकबारगी यह विचार कौंध गया—"क्या मैं अब अपनी प्यारी मातृ-भूमि के पुनः दर्शन कर सकूँगा ? क्या मेरी मातृ-भूमि से यह अंतिम बिदाई है ?" इस विचार से वे क्षणमात्र विह्वल हो गए।

४ जुलाई १९११ को सावरकर अंदमान पहुँचे, जहाँ उन्हें नरकतुल्य कठोर कारागार में बंदी बनाकर रखा गया। उन्हें वहाँ कैसी-कैसी असह्य यंत्रणाएँ सहनी पड़ीं, यह वर्णन करना असंभव है। उन्हें वर्षों तक रस्सी कूटने, कोल्हू चलाने जैसे परिश्रम का काम करना पड़ा। आठ दिन तक उन्हें हाथों में हथकड़िया पहनाकर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

टाँगकर रखा गया। एक महीना एकांत काल-कोठरी में उन्हें रहना पड़ा। इन असह्य यातनाओं से ऊबकर कई बार उनके मन में आत्महत्या तक के विचार आते थे। अनेक राजबंदियों ने अंदमान की यम-यातनाओं से ऊबकर के प्राण भी दे दिये थे और कुछ बंदी पागल बन गये थे।

अंदमान के कारावास में रहते हुए भी वे राजबंदियों के विषय में निरंतर आंदोलन करते रहे। इस समय तक इनका छोटा भाई नारायण जेल से मुक्त हो चुका था। उसे वर्ष में एक बार पत्र लिखने का इन्हें अवसर मिलता था। वे पत्र द्वारा भाई को आंदोलन की प्रेरणा दिया करते थे। बंदियों में से जो लोग अपनी सजाएँ समाप्त कर स्वदेश लौटते थे, उन्हें सावरकर अपनी कविताएँ तथा संदेश कंठस्थ करा देते थे। जो लोग स्मरण न कर सकते थे, उन्हें लिखकर देते थे। साथ ही उन्हें पत्र छिपाने की विधि भी बता देते थे। इस प्रकार इनकी अनेक कविताएँ और लेख ६०० मील की दूरी पार करके भारत पहुँचे और समाचार पत्रों द्वारा जनता में वितरित हुए।

करीब आठ वर्ष तक अंदमान में सावरकर का स्वास्थ्य ठीक रहा और वे सब शारीरिक यातनाएँ चुपचाप सहते रहे। परंतु ऐसी बात सदा तो नहीं चल सकती थी। अतः इनका स्वास्थ्य निरंतर गिरने लगा। संग्रहणी के रोग से शरीर अस्थिपंजर हो गया। इनका वजन ११६ पौंड से घटकर ६८ पौंड रह गया। फिर भी इन्हें अस्पताल न भेजकर कारागार की कोठरी में ही रखा गया। वे १६१६ से १६२१ तक लगातार दो वर्ष रोग शय्या पर पड़े रहे। इस अवस्था में अपनी मृत्यु निकट देखकर इन्होंने मृत्यु का आह्वान करते हुए 'मरणोन्मुख शय्या पर' नामक एक मराठी कविता भी रची थी।

यद्यपि सावरकर अपने देश से ६०० मील दूर अंदमान की काल-कोठरी में बंद थे, तथापि भारतियों ने अपने इस वीर देश-भक्त को एक दिन के लिए भी नहीं भुलाया था। इनके साहसिक कृत्यों की जनता में सर्वत्र प्रशंसा की जाती थी और समाचार-पत्रों एवं सार्वजनिक सभाओं द्वारा इनकी शीघ्र रिहाई के लिए लगातार प्रयत्न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किये जाते थे। इनके छुटकारे के लिए एक 'सावरकर सप्ताह' मनाया गया और करीब सत्तर हजार हस्ताक्षरों से एक प्रार्थना-पत्र सरकार के पास भेजा गया। उस समय तक किसी नेता की रिहाई के लिए इतना बड़ा आंदोलन कभी नहीं हुआ था। अंत में सरकार को विवश होकर सावरकर को १६२१ की मई में अंदमान से कलकत्ता बुलाना पड़ा। वहाँ से उन्हें रत्नागिरि जेल भेज दिया गया। बाद में ६ जनवरी १६२४ को उनकी जेल से मुक्तता हुई और उन्हें रत्नागिरि जिले में स्थानबद्ध कर रखा गया। केवल जिले भर में घूमने-फिरने की स्वतंत्रता इन्हें दे दी गई, इसका लाभ उठाकर इन्होंने रत्नागिरी में हिंदू-संगठन का कार्य आरंभ किया।

यह कार्य इतनी लगन से किया गया कि नजरबंदी के तेरह वर्षों का इतिहास हिंदू-संगठन का ही इतिहास कहा जा सकता है। महाराष्ट्र के इस प्रदेश में छुआछूत उग्ररूप में फैली हुई थी। सावरकर ने सर्वप्रथम इसी बुराई पर कुठाराघात करने का निश्चय किया। इन्होंने घूम-घूमकर जिले के विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देकर धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टि से छुआछूत को हटाने की आवश्यकता बतलाई। सावरकर की तर्कपूर्ण दलीलों से प्रभावित होकर अनेक शिक्षित नवयुवक इनके साथ हो लिए। अवकाश के दिन ये लोग दलित-अस्पृश्य परिवारों में जाते, उनके साथ सहभोज करते, उन्हें उपदेश देते और उनसे साफ-सुथरा रहने एवं मद्य-मांस छोड़ने का आग्रह करते। इस पारस्परिक मिलाप से दलितों में अपने को हीन समझने की भावना धीरे-धीरे जाती रही। सावरकर की प्रेरणा से भागोजी नामक एक श्रीमान ने ढाई लाख रुपये व्यय करके रत्नागिरि में 'श्री पतित पावन मंदिर' का निर्माण करा दिया। इसमें प्रत्येक हिंदू-मात्र, चाहे वह अछूत जाति का ही क्यों न हो, पूजा कर सकता है। इस प्रकार सावरकर ने इनके इस क्रांतिकारी कार्य से सनातनी हिंदुओं का कोप भड़क उठा। उन्होंने इसका न केवल विरोध ही किया, अपितु इसमें रोड़े अटकाने का भरसक प्रयत्न किया, परंतु सावरकर के साहस के सम्मुख विरोधी हार मानकर बैठ गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सावरकर केवल अछूतोद्धार से ही संतुष्ट न हुए। ईसाई पादरियों और मुल्लाओं द्वारा भोले-भाले हिंदुओं को बहकाकर किये जा रहे धर्मांतरण के विरोध में सावरकर ने शुद्धि-आंदोलन चलाने का निश्चय किया। रत्नागिरि में उन्होंने अपने निवास काल में लगभग ३५० धर्म-भ्रष्ट हिंदुओं को पुनः हिंदू-धर्म में दीक्षित किया। साथ ही उन्होंने इसी समय अखिल भारतीय हिंदू संगठन लिए भी अथक परिश्रम किया।

सावरकर एक उच्चकोटि के कवि, वक्ता और साहित्यिक भी थे। नागरी लिपि में छपाई के कुछ दोष देखकर उन्होंने इसकी वर्णमाला में आवश्यक सुधार किया, ताकि छपाई में अधिक सुविधा हो। आज तो उन सुधारों को प्रायः सभी मराठी पत्रों ने अपनाकर अपने टाइपों में परिवर्तन न कर लिया है और हिंदी प्रेसों में भी उनका तेजी से अनुकरण किया जा रहा है।

सावरकर ने अपनी नजरबंदी काल में अंग्रेजी और मराठी में अनेक मौलिक ग्रंथ भी लिखे हैं, जिनमें मैजिनी, गैरीवाल्डी की जीवनियाँ '१८५७ का स्वातंत्र्य-समर', 'मेरी कारावास कहानी', 'हिंदुत्व' आदि मुख्य हैं। 'हिंदुत्व' पुस्तक में उन्होंने 'हिंदू' की अपनी स्वतंत्र व्याख्या की है, जिसे आगे चलकर हिंदू महासभा ने अधिकृत मान्यता प्रदान कर दी उनकी 'हिंदू' की परिभाषा इस प्रकार है—

आसिन्धु सिन्धु पर्यंता यस्य भारतभूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितिस्मृतः।।

अर्थात्—"सिंधु (नदी) से सिंधु (समुद्र) तक फैली हुई भारतभूमि को जो अपनी पितृ-भूमि और पुण्य-भूमि मानता है, वह 'हिंदू' है।"

इस व्याख्या के अनुसार वे सनातनी, आर्य-समाजी, बौद्ध, सिक्ख, जैन सभी संप्रदायों को हिंदू-धर्म के अंतर्गत ही मानते हुए सबको 'हिंदू' नाम से ही संबोधित करते थे।

सावरकर के रत्नागिरि वास्तव्य-काल में महात्मा गाँधी भी महाराष्ट्र के दौरे के सिलसिले में रत्नागिरि गये थे और उन्होंने सावरकर से भेंट की थी। बाद में उनके तथा उस समय के बंबई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राज्य मंत्रिमंडल के मंत्री श्री जमनादास मेहता के प्रयत्न से सरकार ने सावरकर पर से सारे निर्बंध हटा लिए और उन्हें ८ मई १९३७ को बिना शर्त नजरबंदी से मुक्त कर दिया।

उनकी नजरबंदी समाप्त होते ही विभिन्न राजनैतिक दलों ने उन्हें अपने दल में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया। कांग्रेस के प्रमुख नेता पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी एक विशेष वक्तव्य द्वारा सावरकर का अभिनंदन किया और उन्हें कांग्रेस में सम्मिलित होने पर ऊँचा पद देने का प्रलोभन भी दिया, पर उन्हें कांग्रेस के मुसलमानों को हर कीमत पर संतुष्ट करने की नीति पसंद नहीं थी। अतः उन्होंने कांग्रेस में जाना स्वीकार नहीं किया।

बाद में सावरकर ने हिंदू-संगठन के कार्य को ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य बनाया। वे हिंदू-महासभा के सक्रिय सदस्य बने। उन्होंने शस्त्र-बंदी कानून रद्द करने के लिए आंदोलन कर १९३८ के जून में पूना में शस्त्रबंदी के खिलाफ विशाल जुलूस निकाला।

हिंदू-संगठन के लिए उन्होंने महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश आदि प्रांतों में घूम-घूमकर जोरदार प्रचार किया। १९३९ में सावरकर कलकत्ता में आयोजित अ० भा० हिंदू महासभा अधिवेशन के अध्यक्ष नियोजित किये गये। उसी वर्ष हैदराबाद में आर्य-समाज द्वारा सत्याग्रह आंदोलन शुरू था। सावरकर ने सदल-बल इस सत्याग्रह में भाग लेकर उसे यशस्वी बनाया। इसके बाद सन् १९४१ में हिंदू-महासभा का अधिवेशन सावरकर की अध्यक्षता में भागलपुर में निर्धारित किया गया था। बिहार सरकार ने उस पर पाबंदी लगा दी थी। इसके बावजूद भागलपुर में अधिवेशन संपन्न हुआ। सावरकर को अधिवेशन के लिए जाते हुए मार्ग में ही गिरफ्तार कर लिया और उन्हें एक सप्ताह तक जेल में रखा गया। बाद में उनका अध्यक्षीय भाषण अधिवेशन में पढ़कर सुना दिया गया था।

सन् १९४२ में ब्रिटिश पार्लियामेंट के एक मंत्री श्री स्टेफर्डक्रिप्स भारतीय स्वतंत्रता के प्रश्न पर चर्चा करने हेतु भारत आये थे। उन्होंने देश के दलों के प्रमुख नेताओं को इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंध में चर्चा के लिए आमंत्रित किया था। हिंदू-महासभा के अध्यक्ष के नाते सावरकर से भी उन्होंने भेंट की और उनके सम्मुख भारत के विभाजन की योजना रखी। सावरकर ने अखंड भारत पर जोर देते हुए क्रिप्स योजना का कड़ा विरोध किया। इसके बाद वायसराय ने भी सावरकर से इसी सिलसिले में दो-बार भेंट की, पर वे अंत तक अखंड भारत के ही पक्षपाती रहे।

सन् १९४२ के क्रांतिकारी आंदोलन के बाद देश में स्वतंत्रता की भावना तीव्र हो गई थी। अंग्रेज अब भारत से शीघ्र ही विदा होंगे, यह धारणा जनता में दृढ़ हो चली थी, पर भारत छोड़ने के पूर्व देश का बँटवारा न कर जायें, इस आशंका से नेतागण बेचैन थे। मुस्लिमलीग पाकिस्तान की माँग पर अटल थे। ऐसे समय में सावरकर ने भारत-विभाजन के खिलाफ जोरदार आंदोलन शुरू कर दिया। पर अंत में कांग्रेस नेताओं ने पाकिस्तान की माँग स्वीकार कर ली और १५ अगस्त १९४७ को भारत का विभाजन होकर रहा। इस महान् दुर्दैवी घटना से यद्यपि सावरकर के हृदय को गहरी ठेस लगी, फिर भी इस बात से हर्षित थे कि, किसी प्रकार भी भारत को चिरवांछित स्वतंत्रता का लाभ मिल गया है। उन्हें भारत को स्वतंत्र देखने का उनका जो स्वप्न था, वह पूरा हो गया। उन्होंने १५ अगस्त १९४७ को स्वयं अपने निवास स्थान पर भारत का तिरंगा राष्ट्र-ध्वज बड़े अभिमान के साथ फहराया था।

भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति से जहाँ आम जनता में हर्षोल्लास का वातावरण फैला हुआ था, वहाँ अनेक लोग देश-विभाजन से अत्यंत दुःखी हो रहे थे। ऐसे लोगों को सांत्वना देते हुए सावरकर ने कहा था—"आज भारत का तीन चौथाई प्रदेश स्वतंत्र हो गया है। इसलिए हमें हर्ष मनाना चाहिए। आज सदियों के बाद हमारा इतना बड़ा प्रदेश परतंत्रता से मुक्त हुआ है। हमें विभाजित एक चौथाई हिस्से से—पाकिस्तान से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। आज हमें जो कुछ मिला है, उसी की प्राणपण से रक्षा करें और अपने देश की स्वतंत्रता पर जरा भी आँच न आने दें। अब हमें अपने देश को प्रजातंत्रिक ढंग से समृद्ध और बलवान् बनाना है, ताकि निकट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भविष्य में हम अखंड-भारत के अपने अंतिम साध्य को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।''

स्वातंत्र्य-प्राप्ति से भारतीय जनता आनंद से बेहोश थी, पर उधर देश-विभाजन के कारण पाक-अधिकृत प्रदेश में हिंदुओं का जीवन उद्ध्वस्त और बरबाद हो रहा था। लाखों व्यक्ति पाकिस्तान से अपनी जमीन-जायदाद, धन-संपत्ति छोड़कर निर्वासित बने भारत आ रहे थे। उनकी करुण-कहानी सुन-सुनकर भारतीय जनता में रोष की भावना प्रज्ज्वलित हो रही थी। पाकिस्तान में चल रहे अत्याचारों को रोकने के लिए भारतीय नेताओं ने भरसक कोशिश की, पर उसका कोई नतीजा नहीं निकला। इधर महात्मा गाँधी भारतीय जनता की प्रखर भावनाओं को शांत करने में जी-जान से जुटे हुए थे। इसी बीच ३० जनवरी १९४८ की शाम को नाथूराम गोडसे नामक एक महाराष्ट्रीय ब्राह्मण युवक ने महात्मा गाँधी की अमानुष ढंग से गोली चलाकर हत्या कर दी। सारा देश इस महान् दुर्दैवी घटना से शोकाकुल हो गया। गोडसे को घटना-स्थल पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। हत्याकांड के षड्यंत्र की अदालती जाँच शुरू हुई और इस षड्यंत्र में सम्मिलित होने के संदेह पर सावरकर को भी गिरफ्तार कर लिया गया। पर अंत में जाँच-पड़ताल के बाद सरकार ने उन्हें निर्दोष घोषित कर फरवरी १९४९ में जेल से मुक्त कर दिया।

२६ जनवरी १९५० को भारतीय गणतंत्र की वैधानिक रूप से घोषणा की गई और प्रथम राष्ट्रपति के नाते डॉ० राजेंद्र प्रसाद निर्वाचित हुए, तब सावरकर ने उनको तार भेजकर अभिनंदन किया था। साथ ही राष्ट्र के लिए अपनी सेवायें अर्पण करने की इच्छा भी प्रदर्शित की थी। पर दुर्भाग्य से उनकी सेवाओं का लाभ न उठाकर सरकार ने नेहरू—लियाकतअली समझौते के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण करने के बहाने हिंदू-महासभा एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक के नेताओं को हिरासत में ले लिया, जिनमें सावरकर भी थे। इस सिलसिले में एक वर्ष तक उन्हें जेल में स्थानबद्ध रखने के बाद मुक्त किया गया। बाद में १२ मई १९५७ को १८५७ के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता-संग्राम का शताब्दि-समारोह सारे देश में मनाया गया। उसमें सावरकर जी ने प्रमुख रूप से योगदान दिया था और दिल्ली में हुए समारोह की उन्होंने अध्यक्षता भी की थी। उस समय सावरकर ने भारतीय जनता को संबोधित करते हुए कहा था—

"स्वतंत्रता-प्राप्ति का महान् ऐतिहासिक कार्य हमारी पीढ़ी ने संपन्न कर दिया है। अब स्वतंत्रता की प्राणपण से रक्षा करने की जिम्मेदारी भारत की नई पीढ़ी को हिम्मत के साथ अपने कंधे पर लेनी चाहिए। भारत के भाग्य-निर्माता हमारे नवयुवक ही है।" इस स्फूर्तिदायक संदेश को सुनकर उस प्रचंड सभा में उपस्थित लाखों व्यक्तियों ने तालियों की गड़गड़ाहट और स्वतंत्र्य वीर सावरकर की जयकारों से आकाश गुंजा दिया था।

सन् १९६२ में भारत पर चीन के आक्रमण और सन् १९६५ में पाकिस्तानी आक्रमण के समय सावरकर बड़ी बेचैनी महसूस कर रहे थे। सन् १९६५ के भारत-पाकिस्तान संघर्ष के बाद उनका स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरता गया और ताशकंद समझौते से तो उनके हृदय को गहरा आघात लगा। तब से वे शीघ्र मृत्यु की कामना कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने जानबूझ कर शरीर को प्राणहीन बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी। प्रथम कुछ दिनों तक उन्होंने अन्न त्यागकर चाय, दूध आदि पेय पदार्थों पर ही निर्भर रहने का निर्धारण किया। बाद में सावरकर केवल जल पर ही रहने लगे। डॉक्टरों ने अंत तक उन्हें किसी रोग से पीड़ित नहीं बताया था। वह तो उनकी जीवित समाधि ही थी। इस प्रकार सावरकर दि० २६ फरवरी १९६६ को स्वेच्छा से इस नश्वर शरीर को त्यागकर स्वर्ग को सिधार गये।

नर-शार्दूल सावरकर के क्रांतिकारी जीवन का रोमांचक इतिहास भारतीय युवकों के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद है। आज हमारे राष्ट्र के सम्मुख राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भीषण समस्याएँ मुँह फैलाए खड़ी हैं, जिससे राष्ट्र का भविष्य धूमिल दिखाई दे रहा है। ऐसे समय में सावरकर जैसे दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ का अभाव बेहद खटक रहा है। वे राष्ट्र को भावी संकट के समय पर सही चेतावनी देने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले सावरकर थे। उन्होंने वर्षों पूर्व चीन और पाकिस्तान जैसे आततायियों के आक्रमण की चेतावनी देकर राष्ट्र के कर्णधारों को सचेत करने का प्रयास किया था। वे अंत तक अखंड भारत के हामी रहे और उसकी रट लगाते-लगाते ही उनका प्राणोत्क्रमण हुआ था।

हिंदू और हिंदुत्व की व्याख्या—

हिंदू और हिंदुत्व की व्याख्या करते हुए उसकी प्राचीनता, श्रेष्ठता और उपयोगिता का श्री सावरकर ने बड़ी योग्यता और शोध (खोज) के आधार पर प्रतिपादन किया था। अनेक लोग इस शब्द को मुसलमानों की देन समझते हैं। अनेक इसका अर्थ 'दास' या 'गुलाम' बतलाते थे। श्री सावरकर ने इस प्रकार की मान्यताओं का जोरदार खंडन किया और कहा—

'हिंदू स्वयमेव एक राष्ट्र है। एक भौगोलिक निवासस्थान, एक संस्कृत भाषा, एक इतिहास, साहित्य का एक समान आविष्कार और एकता—ये पाँच कसौटियाँ लगाकर देखा जाए तो स्वयंमेव एक राष्ट्र है, ऐसी धारणा तुरंत बन जायेगी। जिनके पास एक निश्चित भौगोलिक निवासस्थान नहीं था, वह यहूदी जाति भी आज इस्राइल राष्ट्र के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। फिर हिंदू-राष्ट्र की कल्पना कैसे असत्य हो सकती है ? हिंदुओं के लिए निश्चित रूप से एक भौगोलिक आश्रयस्थान है और वह है भारतवर्ष। इतिहास बताता है कि जब किसी हिंदू पर आपत्ति आई, तो वह इसी भूमि के हिंदू नागरिकों की ओर आशा भरी दृष्टि से देखता रहा। यद्यपि भारत में अनेक भाषायें हैं, पर वे सब देववाणी संस्कृत के वंश ही हैं। यवन, हूण, शक, कुराण, अरब, तुर्क, पठान, मुगल आदि जातियों के आक्रमण भारत पर हुए, लेकिन हम उनसे अपनी परंपरा की रक्षा के हेतु लड़ते रहे। विजय नगर के हिंदू राज्य की, राजपूतों के बलिदान की, सिक्खों के उत्थान की तथा मराठा वीरों द्वारा स्वराज्य स्थापना की प्रेरणा एक ही थी। 'हिंदुत्व' की रक्षा के अतिरिक्त उनका और कोई उद्देश्य न था।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"इसी प्रेरणा-सूत्र को अपनाकर हमारे पूर्वज पोर्तुगीज, अंग्रेज, फ्रेंच आदि शासकों के साथ गोवा, भारत, पांडुचेरी आदि में लड़ते रहे। एक समय अखिल भारतवर्ष में इस्लामी आक्रमण की बाढ़ आ गई थी। लेकिन उसको समाप्त करके महाराष्ट्रीय सेनाओं ने दिल्ली से आगे तक अपना झंडा लगाया। राजा रणजीत सिंह और उनके सरदार हरिसिंह, नलुआ ने भी उसी हिंदू-ध्वजा को समर्थ हाथों से काबुल तक फहराया। गुरु गोविंदसिंह के शब्द स्पष्ट थे—"हिंदू ही सदा कहलायेंगे, निजधर्म सदैव बढ़ायेंगे।" साढ़े चार सौ वर्ष पोर्तुगाली शासन से गोवा में हिंदू लड़ते रहे। वहाँ के ईसाई शासकों ने इतने भयानक अत्याचार किये कि उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। अंग्रेजों का आक्रमण विज्ञान के बल पर था। चतुराई के साथ वे इस देश पर अधिकार जमाकर बैठ गये थे। पर उनसे भी लड़कर हमने स्वतंत्रता प्राप्त की। अंग्रेजों के साथ कौन लड़े ? उग्रवादी, क्रांतिकारी, युवकों, किनके नाम लिए जाते हैं ? सुभाष की सेना में अधिकांश कौन थे ? काँग्रेस के नेतागणों में अधिकांश कौन थे ? सत्याग्रह आंदोलन में अधिकांश कौन थे ? इसका एक उत्तर यही है कि देश के लिए बलिदान के हर एक कार्य में हिंदू ही आगे आये। कारण यह है कि हिंदू ही सोचता है कि 'देश मेरा है, इसके लिए बलिदान करना मेरा कर्तव्य है।' इस दृष्टि से जो कोई हिंदुओं के पक्ष को निर्बल करता है, उनके साहस को घटाने का काम करता है, वह अवश्य ही देश के साथ द्रोह करता है।"

सावरकर का मत था कि हमारे देश का 'भारतवर्ष' नाम तो थोड़े ही समय का है, इसका प्राचीन नाम 'सप्त-सिंधु' या 'सिंधुस्थान' था। उज्जैन के सम्राट् विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने समस्त विदेशी आक्रमणकारियों को हराकर आर्य-राष्ट्री सीमा सिंधु नदी निश्चित कर दी और उसके आगे 'म्लेच्छ-देश' नियत किया। इस घटना के महत्त्व को बतलाते हुए उन्होंने लिखा है—

"राष्ट्र संबंधी यह व्याख्या वैसे ही शाही फरमान द्वारा हो चुकी थी जैसे शाही फरमान 'सिंधुस्थान' में होते थे। शक्तिशाली लोकमत के निर्णय का महत्त्व शाही फरमान से भी अधिक था। अटक नदी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'सिंधुस्थान' की पश्चिमी सीमा निर्धारित करने का निश्चय किसी महत्त्वाकांक्षी राजा के हृदय की अभिलाषा मात्र नहीं थी। यह निश्चय शताब्दियों के इतिहास ने तथा राष्ट्रीय भावनाओं से भरी जनता ने सर्वसम्मति से किया था। सिंधु को अपनी राष्ट्रीय सीमा निर्धारित करना और इस निर्णय को जी-जान से निभाना, बड़ी से बड़ी कठिनाई को इस निर्णय की रक्षा के लिए तुच्छ समझना, किसी थोथी महत्त्वाकांक्षा का परिणाम नहीं हो सकता। आज भी ये शब्द असंख्य जनता के हृदय में देश-प्रेम का प्रवाह ला देते हैं। लाखों आदमी जो 'सिंधुस्थान' (अब हिंदुस्तान) शब्द के सच्चे अर्थ को नहीं समझते, फिर यह उनको उनकी राष्ट्रीयता की याद दिला देते हैं। इस नाम को धार्मिक रंग देना भूल है, यह विशुद्ध राष्ट्रीय नाम है।"

आगे चलकर उन्होंने बतलाया कि यद्यपि संस्कृत का प्रचार घटकर जनता में प्राकृत भाषा का प्रचार हो जाने से 'सिंधुस्थान' का उच्चारण 'हिंदुस्थान' किया जाने लगा। जितने भी प्राचीन हिंदी-ग्रंथ मिलते हैं, उनमें 'हिंदू' और हिंदुस्थान शब्द का ही प्रयोग मिलता है। ये प्रमाण उस समय के हैं, जब मुसलमानों का इस देश में आगमन भी नहीं हुआ था—

"हिंदी में लिखे गये सब ऐतिहासिक ग्रंथों में 'पृथ्वीराज रासो' जिसे चंदवरदाई ने लिखा था, सबसे प्राचीन और प्रामाणिक माना जाता है। उसके पूर्व केवल एक काव्य ही और लिखा गया था। आश्चर्य की बात है कि उस सर्व प्रथम काव्य में भी 'हिंदुस्थान' का स्मरण बड़ी श्रद्धा और राष्ट्रीय-भावना से किया गया है। वह काव्य चंदवरदाई के पिता 'वेन' ने अजमेर के राजा पृथ्वीराज के पिता को संबोधन करके लिखा था—

अटल ठाट महिमाट, अटल तारागढ़ थाने।
अटल नग्र अजमेर अटल हिन्दव अस्थाने।।

हिंदी भाषा के आदि कवि चंदवरदाई ने 'हिंदू, हिंदवान् और हिंद' शब्दों का प्रयोग इतनी बार किया है कि हमें इन शब्दों के उस समय अच्छी तरह प्रचलित और लोकप्रिय होने में कोई संदेह नहीं रह जाता। पृथ्वीराज द्वारा शाहबुद्दीन की गिरफ्तारी और इस शर्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर कि वह पुनः भारत पर आक्रमण नहीं करेगा—रिहाई का वर्णन करते हुए चंद ने लिखा है—

किया सलाम तिन बार जाहु अपन्ने सुथानह।
मति हिन्दु पर साहि सज्जिआऔ स्वस्थानह।।

पर शाहबुद्दीन पर इस उदार व्यवहार का कोई प्रभाव न पड़ा और बार-बार आक्रमण करता रहा। इन युद्धों के वर्णन में बार-बार 'हिंदू' शब्द आया है—

जब हिन्दु दल जोर हुआ छुट्टि मीरधर भ्रम।
असमय अरवस्तान चला करन उद्वसाक्रम।।
जुरे हिंदु मीरं बहे खग्ग तारं।
मुखे मारमारं वहे सूरसारं।।
आज भाग चहुआन घर आज भाग हिंदवान।
इन जीवित्त दिल्लीश्वर गंज न सक्के आन।।

हिंदी प्राचीन कवियों में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय भावना रखने वाले महाकवि भूषण ने अपनी रचनाओं जगह-जगह 'हिंदवान' का उल्लेख किया है।

हिन्दुन के पति सों न विसात सतावत हिन्दु गरीवन पाय के।
लीजै कलंक न दिल्ली के बालम आलम आलमगीर कहायके।
राखी हिन्दुवानी, हिन्दुवान को तिलक राख्यौ।
स्मृति और पुराण राख्यो, वेद विधि सुनि मैं।।

इस प्रकार अनेक उदाहरणों से 'हिंदुत्व' की प्राचीनता और महत्ता सिद्ध करके श्री सावरकर ने यही निष्कर्ष निकाला था कि हमको अपने समस्त देशवासियों में ऐसी भावना उत्पन्न करनी चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी प्रेरणा देनी चाहिए, जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ बनें और संसार के अन्य राष्ट्रों के सामने गौरव के साथ मस्तक ऊँचा कर सकें—

इस प्रकार हमने देखा कि 'हिंदुत्व' की विशेषताएँ ही हमारी राष्ट्रीय विशेषताएँ हैं। हम इसी आधार पर विशाल राष्ट्र की इमारत खड़ी कर सकते हैं। शर्त यही है कि हम अपनी खूबियों को समझें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उनका उपयोग करें। इस जमाने में छोटे राष्ट्रों की कोई हैसियत नहीं। सम्मिलित राष्ट्रों का ही यह युग है। राष्ट्रसंघ, पान इस्लामिज्म, पानस्लाविज्म के नाम पर छोटे-छोटे राष्ट्र मिलकर अपना विशाल राष्ट्रों के रूप में सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। पृथक् रहने से उनका अस्तित्व संकट में पड़ जाता है। जिन राष्ट्रों को भौगोलिक, सांस्कृतिक सुविधाएँ प्राप्त नही हैं, वे भी अन्य राष्ट्र के साथ संगठित होने का उद्योग कर रहे हैं और एक हम हैं, जो राष्ट्र निर्माण की उत्कृष्टतम सुविधाएँ प्राप्त होने पर भी उनका उपयोग नहीं करते। हमारे सिख-जैन-समाजी-सनातनी आदि बने-बनाये संघ को तोड़ने में अपनी शक्ति खर्च कर रहे हैं। वे न केवल भविष्य में अपने को हिंदुत्व से पृथक् करके अलग जातीयता कायम करने का आंदोलन कर रहे हैं, बल्कि सदियों के सूत्र को भी तोड़ने में प्रयत्नशील हैं।

यद्यपि हिंदू राष्ट्र की कल्पना से वीर सावरकर अभिभूत थे, पर उनकी हिंदू की व्याख्या बहुत विस्तृत और मानवता की पर्यायवाची थी। जीवन के पूर्वार्ध में वे सशस्त्र क्रांतिकारी एवं उत्तरार्ध में हिंदू-संगठन के वे प्रबल समर्थक रहे, पर उनकी आंतरिक भावना अत्यंत उदार थी। अनेक अवसरों पर उनके मुख से ये उद्‌गार सुने गये थे—

हमारी सच्ची जाति मनुष्य है।
हमारा सच्चा धर्म मानवता है।।
हमारा देश अखिल विश्व है।
और हमारा सच्चा शासक ईश्वर है।।

आओ हम सब भारतवासी क्रांतिवीर नर-शार्दूल सावरकर की इस पुण्य-भावना से अभिभूत होकर, उसे अपने आचरण द्वारा सत्य प्रमाणित करने का संकल्प करें।

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org